तुलसी माँ की कहानी

एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी थे। उनके कोई सन्तान नहीं थी। ब्राह्मण सुबह रोजाना नदी में स्नान करने जाता और घर आकर पूजा पाठ करता।

एक दिन ब्राह्मण नदी पर गया स्नान सन्ध्या की फिर जाने लगा तो पीछे से किसी ने आवाज दी। 'बाबा मैं भी आऊँ।' उसने पीछे मुड़कर देखा तो कोई नहीं था। फिर से चला और आवाज आई उसने कहा कोई दिखता नहीं है और बोला कि भूत–प्रेत हो तो मत आना, कोई देव हो तो आना। इतने में पांच वर्ष की कन्या आई और बोली, 'बाबा, मैं आपके घर आऊँ।' उसने उसकी अंगूली पकड़ाई और उसको घर लाया। घर आने पर उसकी स्त्री बोली, 'यह कन्या किसकी है।' वह बोली मां मैं तेरी हूँ। उसने ब्राह्मण से पूछा क्या बात है ? ब्राह्मण ने सारी बात कह दी उन दोनों ने उसे बेटी कहके पुकारा, वे दोनों पति–पत्नी खुश हुए और बोले इसका नाम क्या रखे ?

ब्राह्मण बोला– इसका नाम तुलसी रख देते हैं। यह हमारे आँगन की तुलसी है। अब तुलसी खेलने–कूदने लगी। माता– पिता बहुत प्यार करते थे। वह बड़ी हुई तो शादी के योग्य हुई। माता–पिता चिन्ता करने लगे तो तुलसी बोली, मेरी चिन्ता मत करना मुझे तो स्वयं भगवान श्री कृष्ण लेने आयेंगे। तुम तैयारियाँ करो। शादी का मुहूर्त्त निकाला कार्तिक सुदी एकादशी के दिन तुलसी की शालिगराम के साथ शादी हुई और तुलसी जाने लगी। उसके माता–पिता रोने लगे। बेटी हम तुम्हें कहा लेने आयेंगे। तुलसी ने कहा 'माता–पिता आप मेरी चिन्ता मत करना। मेरा ससुराल द्वारकाधाम है। आप जब याद करोगे तो मैं आ जाऊँगी। आप घर में तुलसी लगाना। उससे मन की शान्ति होती है, घर की शुद्धि होती है। आंगन की तुलसी को आप सदा रखना, उनकी पूजा अर्चना करना।'

जय माँ तुलसी।